International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 01(III), January - March, 2023, pp. 353-363

शिक्षित गैर कामकाजी एवं कामकाजी महिलाओं का आधुनिकीकरण तथा मूल्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

कु. कल्पना*
डॉ. (श्रीमती) कमलेश सिंह**
डॉ. विवेक बापट***

प्रस्तावना

कामकाजी महिला शब्द का प्रयोग प्रायः घर से बाहर नौकरी करने वाली महिला के सन्दर्भ में किया जाता है। वर्तमान समय में महिलाएँ घर परिवार के साथ–साथ बाहर के क्षेत्रों में भी कदम रख रही हैं। वह मात्र स्कूलों, कॉलेजों अथवा कार्यालयों में कार्य करने तक ही सीमित नहीं रहीं बल्कि उद्योग–धन्धों, कारखानों, न्यायालयों, प्रशासन, राजनीति तथा अन्य व्यवसायिक क्षेत्रों में भी कार्य कर रही हैं। नौकरी करने के कारण जहाँ एक ओर महिलाओं की प्रस्थिति में परिवर्तन आया है वहीं दूसरी ओर उनकी समस्याएँ भी बढ़ी हैं।

पूर्व अध्ययनों से यह प्रमाणित होता है कि कार्यरत महिलाओं के सामने मुख्य समस्या भूमिका सघंर्ष की है। वे अपने आप को परिवार व कार्यालय के अनुसार कैसे समायोजित करती है? निम्न स्वप्रतिबिंब और दोहरी भूमिकाएं कामकाजी महिलाओं के लिये भूमिका सघंर्ष पैदा करती हैं, जिसका प्रभाव परिवारिक संबंधों एवं अपेक्षित भूमिकाओं पर पड़ता है। कामकाजी महिलाएं आज भी आर्थिक रूप से पुरूषों से मुक्त नहीं है, क्योंकि जो महिलाएं अपनी परिवार की अर्थव्यवस्था में योगदान करती हैं वे अपनी आय को अपनी इच्छानुसार व्यय करने के लिये स्वतंत्र नहीं हैं। सामाजिक, नैतिक व मनोवैज्ञानिक आसामों में भी उसकी स्थिति पुरूषों के समान नहीं है, जिस प्रकार वह नौकरी करती है, घर का काम करती है इन सबके प्रति उसकी निष्ठा उसके जीवन के स्वरूप के सन्दर्भ पर निर्भर करती है और समाज द्वारा उसका मूल्यांकन बिल्कुल अलग परिप्रेक्ष्य में किया जाता है।

पूर्व में किये गये अध्ययनों का पुनरावलोकन

शोधार्थी द्वारा पूर्व में किये गये शोधों का निम्न प्रकार से अध्ययन किया गया है:–

सिंह, अंगद (1988) अवध यूनिवर्सिटी "ए स्टडी ऑफ द रिलेशनशिप ऑफ मॉर्डनाईजेशन विद एकेदमिक एचीवमेंट, इंटेलिजेन्स एण्ड सोशियों इकोनामिक स्टेटस अंडर ग्रेजूएट स्टूडेन्टस" पर अध्ययन किया गया है। अध्ययन के दौरान 500 विद्यार्थियों का न्यादर्श लिया गया। अध्ययन से निष्कर्ष निकलते हैं कि जितनी ऊँची शैक्षिक उपलब्धि होगी उतना ही आधुनिकीकरण होगा। आधुनिकीकरण के प्रति दृष्टिकोण में बुद्धि महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जितना सामाजिक आर्थिक स्तर ऊँचा होगा उतना ही आधुनिकीकरण का स्तर भी ऊँचा होगा। ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों में आधुनिकीकरण के प्रति दृष्टिकोण में अंतर नहीं पाया गया। अंतर्राष्ट्रिय स्तर पर संपादित किये गये आधुनिकीकरण एवं मूल्यों से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन आवश्यक हैं।

नील, एम अशंकाशी (2000)का यह अध्ययन "ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड के औद्योगिक प्रबंधकों की नेतृत्व भूमिका और सांस्कृतिक मूल्य पर शोध अध्ययन" किया गया है। इनके शोध अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष थे– न्यूजीलैण्ड के औद्योगिक प्रबंधकों की नेतृत्व भूमिका एवं सांस्कृतिक मूल्य, ऑस्ट्रेलिया के प्रबंधकों के संदर्भ में पूर्ण अनुकूल पाए गए। इसके विपरीत आस्ट्रेलिया औद्योगिक की नेतृत्व भूमिका एवं सांस्कृतिक मूल्यों के अनुरूप नहीं पाई गई।

* शोधार्थी, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश।
** प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, जैन कॉलेज, ग्वालियर, मध्यप्रदेश।
*** प्राध्यापक एवं डीन, शिक्षा संकाय, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश।

डस्टली, आर. और अग्रवाल, एम. (2004) ने "छात्राओं के आधुनिकीकरण तथा उनके पारिवारिक पृष्ठभूमि पर अध्ययन" किया है। उनके उद्देश्यानुसार– कॉलेज जाने वाली छात्राओं के आधुनिकीकरण तथा उनके पारिवारिक पृष्ठभूमि के चरों के संबंध का अध्ययन करना था। उन्होंने अपने न्यादर्श में महाराष्ट्र के प्रभावी टाउन से 18–20 साल के बीच की 200 कॉलेज छात्राओं को अध्ययन हेतु लिया है।

उनके शोध के मुख्य निष्कर्ष थे कि सभी कॉलेज की छात्राओं का आधुनिकीकरण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण पाया गया। कॉलेज की छात्राओं के आधुनिक विचारों का विवाह, सामाजिक धर्म, महिला की स्थिति और शिक्षा पर कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

कैलिर एवं जूलियन (2006) ने पारिवारिक सहयोग भूमिका संबंधी संघर्ष एवं वैवाहिक समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया है। उन्होंने न्यादर्श हेतु 51 कार्यरत महिलाओं का चयन किया। आंकड़ों के विश्लेषण हेतु उच्चस्तरीय प्रतिगम विश्लेषण विधि का प्रयोग किया । निष्कर्ष में यह पाया गया कि पारिवारिक सहयोग प्राप्त होने से भूमिका संबंधी संघर्ष कम होते हैं एवं वैवाहिक समायोजन उत्तम रहता है।

डॉ. योगेन्द्र सिंह (2014),अर्थ की महत्ता वाला यह युग महिलाओं को आर्थिक रूप से उन्हें अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। व्यवसायों से जुड़े परिवारों में यहाँ की महिलायें अनाज से लेकर विभिन्न खाद्य सामग्रियों को घर में ही पैकिंग कर स्वयं को बाजार से जोड़कर अपनी अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने में सलंग्न हैं। परम्परागत व्यवसायों का भी आधुनिकीकरण के चलते कायांतरण हो चुका है जिसके चलते उत्पादों की गुणवत्ता भी बढ़ गई है और उसके मूल्य में अभिवृद्धि हुई है।

सौली मित्रा (2019)ने सामाजिक स्वतंत्रता, सामाजिक वर्जनाओं, परंपराओं, रीति रिवाजों और भूमिकाओं से मुक्त होने की इच्छा जो महिलाओं पर प्रतिंबध लगाते हैं, पर कार्य किया है। अतीत में महिलाओं को दासी अथवा देवी माना जाता था जो कि पुरूषों पर निर्भर हैं। उन्हें उच्च शिक्षा प्रदान नहीं की जाती थी। इधर–उधर घूमने व बाहर काम पर जाने पर भी प्रतिबंध लगाया जाता था। उन्हें केवल घर की चारदीवारी के अंदर रह कर काम करना होता था और घर और बच्चों का पालन पोषण करना होता था।

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र के निम्नलिखित उद्देश्य रहे हैं :

- कामकाजी विवाहित व अविवाहित महिलाओं की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्तियों का अध्ययन एवं विश्लेषण करना।
- गैर कामकाजी विवाहित व अविवाहित महिलाओं की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्तियों का परीक्षण करना।
- कामकाजी शहरी एवं ग्रामीण महिलाओं की मूल्यों के प्रति अभिवृत्तियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।

शून्य परिकल्पनाएं

शोध पत्र हेतु निम्न परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया हैः

H_1: कामकाजी विवाहित व अविवाहित महिलाओं की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्तियों में कोई अन्तर नहीं है।

H_2: गैर कामकाजी विवाहित व अविवाहित महिलाओं की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्तियों में कोई अन्तर नहीं है।

H_3: कामकाजी शहरी एवं ग्रामीण महिलाओं की मूल्यों के प्रति अभिवृत्तियों के मध्य कोई अन्तर नहीं है।

शोध के लिए न्यादर्श

शोधार्थी ने अपने शोध कार्य के लिए 500 न्यादर्श का चयन किया है। चयनित 500 न्यादर्श में 250 कामकाजी महिलायें तथा 250 गैर कामकाजी महिलायें हैं।

शोध के लिए चर

अध्ययन हेतु दो चरों का निर्धारण किया है, जिनमें प्रथम चर आधुनिकीकरण एवं द्वितीय चर मूल्य रहा है।

शोध अभिकल्प

शोध कार्य के लिए खोजपूर्ण शोध अभिकल्प का चयन किया है।

प्रयोग में लाये गये उपकरण

- **आधुनिकता मापनीः** यह आधुनिकता मापनी आर. एस. सिंह, ए. एस. त्रिपाठी और रामजी लाल द्वारा निर्मित है। इस मापनी का प्रयोग आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति को जानने के लिये किया गया हैं।
- **विश्वसनीयताः** इस परीक्षण को अन्तिम रूप देने के लिये इसको साधारण विधि द्वारा 100 उत्तरदाताओं पर प्रशासित करके इसकी विश्वसनीयता ज्ञात की गई है।
- **वैधताः** इसकी वैधता सभी मनोवैज्ञानिकों द्वारा 100 प्रतिशत प्रदर्शित की गई है। क्योंकि इस मापनी की विषयवस्तु से उपयोगिता एवं सभी की अभिवृत्तियों का मापन करके वैधता आंकी गई है।
- **सममर्ती वैधताः** इसके लिये कुल अंकन एवं उप स्केल को अंकों का पारस्परिक संबंधित करके किया गया जो इस सारणी द्वारा प्रदर्शित की गई है–

  कुल स्केल स्कोर के साथ उप स्केल स्कोर का सह–संबंध

उप स्केल	वेल्यू ऑफ 'r"
सामाजिक धार्मिक	0.97
विवाहित	0.61
महिलाओं की स्थिति	0.86
शिक्षा	0.64

इसमें सहसंबंध 0.61 से 0.97 माना गया है जो कि उच्च एवं वैध है।

समंकों का विश्लेषण एवं परिकल्पनाओं का परीक्षण

प्रस्तुत शोध पत्र में प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण एवं प्राप्त परिणामों की व्याख्या को प्रस्तुत किया गया है, जो कि निम्न प्रकार से हैः

तालिका 1: कामकाजी विवाहित व अविवाहित महिलाओं की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्तियों के अंतर की सार्थकता

विविधता का स्त्रोत		N	Mean	S.D.	't' Ratio (टी मान)	Level of sign.
सामाजिक–धार्मिक	विवाहित महिलाएं	120	29.41	4.94	9.7	S**
	अविवाहित महिलाएं	130	38.89	8.06		
शादी	विवाहित महिलाएं	120	30.96	5.15	4.3	S**
	अविवाहित महिलाएं	130	35.66	7.40		
महिलाओं की स्थिति	विवाहित महिलाएं	120	32.22	5.71	15.5	S**
	अविवाहित महिलाएं	130	119.43	48.33		
शिक्षा	विवाहित महिलाएं	120	30.76	4.98	10.7	S**
	अविवाहित महिलाएं	130	13.89	12.86		
आधुनिकता	विवाहित महिलाएं	120	123.28	13.98	13.3	S**
	अविवाहित महिलाएं	130	38.79	55.29		

S**= significant on 0.01 level

कामकाजी विवाहित व अविवाहित महिलाओं की सामाजिक–धार्मिक मामलों में आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति के अन्तर की सार्थकता की व्याख्या

उपर्युक्त तालिका के अनुसार कामकाजी विवाहित व अविवाहित महिलाओं की सामाजिक–धार्मिक मामलों में आधुनिकता के प्रति अभिवृत्तियों के अंकों का मध्यमान क्रमशः 29.42 व 38.89 है। दोनों समूहों का

प्रमाप विचलन क्रमश 4.94 व 8.06 है। दोनों समूहों के मध्यमान अंकों में 9.47 का अन्तर पाया गया। अतः विवाहित महिलाओं का सामाजिक–धार्मिक मामलों में आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति अंक, अविवाहित महिलाओं की अपेक्षा अधिक पाया गया। समंकों के विश्लेषण में प्राप्त टी मान 9.7 है जबकि 0.05 व 0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु क्रमशः 1.96 व 2.58 टी मान आवश्यक हैं। प्राप्त टी मान आवश्यक मान से अधिक है इसलिये इस अंतर को सार्थक अंतर माना जा सकता है। अतः कामकाजी विवाहित व अविवाहित महिलाओं की सामाजिक–धार्मिक मामलों में आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति के सम्बन्ध में सार्थक अन्तर है।

कामकाजी विवाहित व अविवाहित महिलाओं की शादी के मामले में आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति के अंतर की सार्थकता की व्याख्या

उपर्युक्त तालिका के अनुसार कामकाजी विवाहित व अविवाहित महिलाओं की शादी के मामले में आधुनिकता के प्रति अभिवृत्तियों के अंकों का मध्यमान क्रमशः 30.96 व 35.66 है। दोनों समूहों का प्रमाप विचलन क्रमशः 5.15 व 7.40 है। दोनों समूहों के मध्यमान अंकों में 4.7 का अंतर पाया गया अर्थात् अविवाहित महिलाओं का शादी का मामले में आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति अंक, विवाहित महिलाओं के अपेक्षा अधिक पाया गया।

चूंकि समंकों के विश्लेषण में प्राप्त टी मान 4.3 है जो कि 0.05 व 0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु क्रमशः 1.96 व 2.58 टी मान से अधिक है इसलिये इस अंतर को सार्थक अंतर माना जा सकता है। अतः कामकाजी विवाहित व अविवाहित महिलाओं की शादी के मामले में आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति के सम्बंध में सार्थक अंतर पाया जाता है।

कामकाजी विवाहित व अविवाहित महिलाओं की महिलाओं की स्थिति के सम्बंध में आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति के अंतर की सार्थकता की व्याख्या

उपर्युक्त तालिका के अनुसार कामकाजी विवाहित व अविवाहित महिलाओं की महिला की स्थिति के संबंध में आधुनिकता के प्रति अभिवृत्तियों के अंकों का मध्यमान क्रमशः 32.22 व 119.43 है। दोनों समूहों का प्रमाप विचलन क्रमशः 5.8 व 48.33 है। दोनों समूहों के मध्यमान अंकों में 87.22 का अन्तर पाया गया। अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि विवाहित महिलाओं का महिलाओं की स्थिति की सम्बंध में आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति अंक, अविवाहित महिलाओं की अपेक्षा कम पाया गया है। समंकों के विश्लेषण में प्राप्त टी मान 15.5 है जबकि 0. 05 व 0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु क्रमशः 1.96 व 2.58 टी मान आवश्यक है। प्राप्त टी मान दोनों स्तरों पर आवश्यक मान से अधिक है इसलिये इस अन्तर को सार्थक अन्तर माना जा सकता हैं। अतः कामकाजी विवाहित व अविवाहित महिलाओं की महिलाओं की स्थिति के सम्बंध में आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति के संबंध में सार्थक अंतर पाया गया है।

कामकाजी विवाहित व अविवाहित महिलाओं की शिक्षा सम्बन्धी आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति के अंतर की सार्थकता की व्याख्या

उपर्युक्त तालिका के अनुसार महिलाओं की शिक्षा सम्बन्धी आधुनिकता की प्रति अभिवृत्तियों के अंकों का मध्यमान क्रमशः 30.76 व 13.89 है। दोनों समूहों के प्रमाप विचलन क्रमशः 4.98 व 12.86 हैं। दोनों समूहों के मध्यमान अंकों में 16.87 का अंतर पाया गया । अतः अविवाहित महिलाओं का शिक्षा सम्बधी आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति अंक विवाहित महिलाओं की अपेक्षा कम पाया गया है। समंकों के विश्लेषण में प्राप्त टी मान 10.7 है जो कि 0.05 व 0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु क्रमशः 1.96 व 2.58 टी मान से अधिक है इसलिये इस अंतर को सार्थक अंतर माना जा सकता है। अतः कामकाजी विवाहित व अविवाहित महिलाओं की शिक्षा सम्बंधी आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति के सम्बंध में सार्थक अंतर पाया जाता है।

कामकाजी विवाहित व अविवाहित महिलाओं की सामान्य आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति के अंतर की सार्थकता की व्याख्या

उपर्युक्त तालिका के अनुसार कामकाजी विवाहित व अविवाहित महिलाओं की आधुनिकमता के प्रति अभिवृत्तियों के अंकों का मध्यमान क्रमशः 123.28 व 38.79 है एवं दोनों समूहों का प्रमाप विचलन क्रमशः 13.98व

55.29 है। दोनों समूहों के मध्यमान अंकों में 84.89 का अंतर पाया गया। अतः अविवाहित महिलाओं का आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति अंक, विवाहित महिलाओं के अपेक्षा कम पाया गया। समंकों के विश्लेषण में प्राप्त टी मान 13.3 है जबकि 0.05 व 0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु क्रमश 1.96 व 2.58 टी मान आवश्यक है। प्राप्त टी मान आवश्यक मान से अधिक है इसलिये इस अंतर को सार्थक अन्तर माना जा सकता है। अतः कामकाजी विवाहित व अविवाहित महिलाओं की आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति के सम्बंध में सार्थक अंतर पाया जाता है।

तालिका 2: गैर कामकाजी विवाहित व अविवाहित महिलाओं की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्तियों के अंतर की सार्थकता

विविधता का स्त्रोत		N	Mean	S.D.	't' Ratio टी मान	Level of sign.
विवाहित	अविवाहित					
सामाजिक–धार्मिक	विवाहित महिलाएं	120	30.88	4.64	0.58	N.S.
	अविवाहित महिलाएं	130	30.37	6.33		
शादी	विवाहित महिलाएं	120	31.02	3.81	3.01	S**
	अविवाहित महिलाएं	130	33.66	6.02		
महिलाओं की स्थिति	विवाहित महिलाएं	120	33.31	5.65	8.37	S**
	अविवाहित महिलाएं	130	41.02	5.82		
शिक्षा	विवाहित महिलाएं	120	30.13	5.36	5.86	S**
	अविवाहित महिलाएं	130	35.66	6.54		
आधुनिकता	विवाहित महिलाएं	120	125.08	12.61	5.78	S**
	अविवाहित महिलाएं	130	140.72	20.03		

N.S. = Not Significant; S** = Significant on 0.01 Level

गैर कामकाजी विवाहित व अविवाहित महिलाओं की सामाजिक–धार्मिक मामलों में आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति के अंतर की सार्थकता की व्याख्या

उपर्युक्त तालिका के अनुसार गैर कामकाजी विवाहित व अविवाहित महिलाओं की सामाजिक–धार्मिक मामलों में आधुनिकता के प्रति अभिवृत्तियों के अंकों का मध्यमान क्रमशः 30.89 व 30.38 है। दोनों समूहों का प्रमाप विचलन क्रमशः 4.65 व 6.34 है। दोनों समूहों के मध्यमान अंकों में 0.51 का अंतर पाया गया। अतः अविवाहित महिलाओं का सामाजिक–धार्मिक मामलों में आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति अंक, विवाहित महिलाओं की अपेक्षा कम पाया गया। समंकों के विश्लेषण में प्राप्त टी मान 0.58 है जबकि 0.05 व 0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु क्रमशः 1.96 व 2.58 टी मान आवश्यक है। प्राप्त टी मान आवश्यक मान से कम है इसलिये इस अंतर को सार्थक अंतर नहीं माना जा सकता है। अतः गैर कामकाजी विवाहित एवं अविवाहित महिलाओं की सामाजिक–धार्मिक मामलों में आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति के संबंध में सार्थक अंतर नहीं है।

गैर कामकाजी विवाहित व अविवाहित महिलाओं की शादी के मामले में आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति के अंतर की सार्थकता की व्याख्या

उपर्युक्त तालिका के अनुसार गैर कामकाजी विवाहित व अविवाहित महिलाओं की शादी के मामले में आधुनिकता के प्रति अभिवृत्तियों के अंकों का मध्यमान क्रमशः 31.03 व 33.67 है। दोनों समूहों के प्रमाप विचलन क्रमशः 3.81 व 6.03 है। दोनों समूहों के मध्यमान अंकों में 2.64 का अन्तर पाया गया अर्थात् अविवाहित महिलाओं का शादी के मामले में आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति अंक विवाहित महिलाओं की अपेक्षा अधिक पाया गया।

चूंकि समंकों के विश्लेषण में प्राप्त टी मान 3.01 है जो कि 0.05 व 0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु क्रमशः 1.96 व 2.58 टी मान से अधिक है इसलिये इस अंतर को सार्थक अंतर माना जा सकता है। अतः गैर कामकाजी विवाहित व अविवाहित महिलाओं की शादी के मामले में आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति के सम्बंध में सार्थक अंतर पाया जाता है।

गैर कामकाजी विवाहित व अविवाहित महिलाओं की महिलाओं की स्थिति के संबंध में आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति के अंतर की सार्थकता की व्याख्या

उपर्युक्त तालिका के अनुसार गैर कामकाजी विवाहित व अविवाहित महिलाओं में महिलाओं की स्थिति के सम्बंध में आधुनिकता के प्रति अभिवृत्तियों के अंकों का मध्यमान क्रमशः 33.32 व 41.03 है। दोनों समूहों का प्रमाप विचलन क्रमशः 5.66 व 5.83 हैं। दोनों समूहों के मध्यमान अंकों में 7.71 का अंतर पाया गया। अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि गैर कामकाजी विवाहित व अविवाहित महिलाओं का महिलाओं की स्थिति के संबंध में आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति अंक अविवाहित महिलाओं की अपेक्षा कम पाया गया है। समंकों के विश्लेषण में प्राप्त टी मान 8.37 है जबकि 0.05 व 0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु क्रमशः 1.96 व 2.58 टी मान आवश्यक है। प्राप्त टी मान दोनों स्तरों पर आवश्यक मान से अधिक है इसलिये इस अन्तर का सार्थक अन्तर माना जा सकता है। अतः गैर कामकाजी विवाहित व अविवाहित महिलाओं की महिलाओं की स्थिति के संबंध में आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति के संबंध में सार्थक अंतर रखते है।

गैर कामकाजी विवाहित व अविवाहित महिलाओं की शिक्षा सम्बंधी आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति के अंतर की सार्थकता की व्याख्या

उपर्युक्त तालिका के अनुसार गैर कामकाजी विवाहित व अविवाहित महिलाओं की शिक्षा सम्बंधी आधुनिकता के प्रति अभिवृत्तियों के अंकों का मध्यमान क्रमशः 30.14 व 35.67 है। दोनों समूहों का प्रमाप विचलन क्रमशः 5.37 व 6.55 है। दोनों समूहों के मध्यमान अंकों में 5.53 का प्रमाप विचलन क्रमशः 5.53 का अंतर पाया गया। अतः अविवाहित महिलाओं का शिक्षा सम्बंधी आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति अंक, विवाहित महिलाओं का शिक्षा सम्बंधी आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति अंक विवाहित महिलाओं की अपेक्षा अधिक पाया गया है। समंकों के विश्लेषण में प्राप्त टी मान 5.86 है जो कि 0.05 व 0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु क्रमशः 1.96 व 2.58 टी मान से अधिक है इसलिये इस अंतर को सार्थक अंतर माना जा सकता है। अतः गैर कामकाजी विवाहित व अविवाहित महिलाओं की शिक्षा सम्बंधी आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति के संबंध में सार्थक अंतर है।

गैर कामकाजी विवाहित व अविवाहित महिलाओं की सामान्य आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति के अंतर की सार्थकता की व्याख्या

उपर्युक्त तालिका के अनुसार गैर कामकाजी विवाहित व अविवाहित महिलाओं की आधुनिकता के प्रति अभिवृत्तियों के अंकों का मध्यमान क्रमशः 125.09 व 140.73 है। दोनों समूहों का प्रमाप विचलन क्रमशः 12.62 व 20.04 है। दोनों समूहों की मध्यमान अंकों में 15.64 का अंतर पाया गया। अतः अविवाहित महिलाओं का आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति अंक, विवाहित महिलाओं की अपेक्षा अधिक पाया गया। समंकों के विश्लेषण में प्राप्त टी मान 5. 78 है जबकि 0.05 व 0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु क्रमश 1.96 व 2.58 टी मान आवश्यक है। प्राप्त टी मान आवश्यक मान से अधिक है इसलिये इस अंतर को सार्थक अंतर माना जा सकता है। अतः गैर कामकाजी विवाहित व अविवाहित महिलाओं की आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति के सम्बंध में सार्थक अंतर पाया जाता है।

तालिका 3: कामकाजी शहरी एवं ग्रामीण महिलाओं की मूल्यों के प्रति अभिवृत्तियों के अंतर की सार्थकता

विविधता का स्त्रोत		N	Mean	SD	"t" Ratio टी मान	Level of Sign.
धार्मिक मूल्य	शहरी महिलाएं	200	10.68	3.950	-.652	NS
	ग्रामीण महिलाएं	50	11.08	3.585		
सामाजिक मूल्य	शहरी महिलाएं	200	8.29	2.160	.015	NS
	ग्रामीण महिलाएं	50	8.28	2.148		
जनसांख्यिकी मूल्य	शहरी महिलाएं	200	8.43	2.337	-2.590	S**
	ग्रामीण महिलाएं	50	9.36	2.048		
सौंदर्य संबंधी मूल्य	शहरी महिलाएं	200	8.38	2.249	.433	NS
	ग्रामीण महिलाएं	50	8.22	2.315		

आर्थिक मूल्य	शहरी महिलाएं	200	8.47	2.336	-.082	NS
	ग्रामीण महिलाएं	50	8.50	2.159		
ज्ञान मूल्य	शहरी महिलाएं	200	8.93	2.400	-.039	NS
	ग्रामीण महिलाएं	50	8.94	2.630		
सुखवादी मूल्य	शहरी महिलाएं	200	8.55	2.301	.338	NS
	ग्रामीण महिलाएं	50	8.42	2.483		
शक्ति मूल्य	शहरी महिलाएं	200	7.79	2.044	-2.436	S*
	ग्रामीण महिलाएं	50	8.56	1.809		
पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य	शहरी महिलाएं	200	9.01	2.561	-.731	NS
	ग्रामीण महिलाएं	50	9.30	2.517		
स्वास्थ्य मूल्य	शहरी महिलाएं	200	8.06	1.989	.317	NS
	ग्रामीण महिलाएं	50	7.96	2.030		

NS: Non-Significant S*: Significant at 0.05 Level S**: Significant at 0.01 Level

कामकाजी शहरी एवं ग्रामीण महिलाओं के धार्मिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्तियों के अंतर की सार्थकता की व्याख्या

उपर्युक्त तालिका के अनुसार 200 शिक्षित कामकाजी शहरी महिलाओं व 50 कामकाजी ग्रामीण महिलाओं की धार्मिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्तियों के अंकों का मध्यमान क्रमशः 10.68 व 11.08 है। दोनों समूहों का प्रमाप विचलन 3.950 व 3.585 है। अतः शहरी कामकाजी महिलाओं में अभिवृत्ति अंक, ग्रामीण महिलाओं के अपेक्षा अधिक पाया गया है, लेकिन यह अंतर सार्थक नहीं है। समंकों के विश्लेषण में प्राप्त टी मान –0.65 जो की ऋणात्मक मान है जबकि 0.05 व 0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु क्रमशः 1.96 व 2.58 टी मान आवश्यक है। प्राप्त टी मान आवश्यक मान से कम है इसलिये इस अंतर को सार्थक अंतर नहीं माना जा सकता। अतः शहरी कामकाजी व ग्रामीण कामकाजी महिलाओं का धार्मिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्तियों के संबंध में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं।

कामकाजी शहरी एवं ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्तियों के अंतर की सार्थकता की व्याख्या

उपर्युक्त तालिका के अनुसार 200 शिक्षित कामकाजी शहरी महिलाओं व 50 कामकाजी ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्तियों के अंकों का मध्यमान क्रमशः 8.29 व 8.28 है। दोनों समूहों का प्रमाप विचलन 2.160 व 2.148 है। अतः शहरी कामकाजी महिलाओं का अभिवृत्ति अंक, ग्रामीण महिलाओं के अपेक्षा अधिक पाया गया है, लेकिन यह अंतर सार्थक नहीं है। समंकों के विश्लेषण में प्राप्त टी मान 0.15 है जबकि 0.05 व 0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु क्रमशः 1.96 व 2.58 टी मान आवश्यक है। प्राप्त टी मान आवश्यक मान से कम है इसलिये इस अंतर को सार्थक अंतर नहीं माना जा सकता। अतः शहरी कामकाजी व ग्रामीण कामकाजी महिलाओं में धार्मिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति के संबंध में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

कामकाजी शहरी एवं ग्रामीण महिलाओं के जनसांख्यिकी मूल्यों के प्रति अभिवृत्तियों के अंतर की सार्थकता की व्याख्या

उपर्युक्त तालिका के अनुसार 200 शिक्षित कामकाजी शहरी महिलाओं व 50 कामकाजी ग्रामीण महिलाओं की जनसांख्यिकी मूल्यों के प्रति अभिवृत्तियों के अंकों का मध्यमान क्रमशः 8.43 व 9.36 हैं । दोनों समूहों का प्रमाप विचलन 2.337 व 2.048 है। अतः शहरी कामकाजी महिलाओं प्रति अभिवृत्ति अंक, ग्रामीण महिलाओं के अपेक्षा अधिक पाया गया है, लेकिन यह अंतर सार्थक नहीं है। समंकों के विश्लेषण में प्राप्त टी मान –2.590 है जबकि 0.05 व 0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु क्रमशः 1.96 व 2.58 टी मान आवश्यक है। प्राप्त टी मान 0.05 सार्थकता स्तर पर अधिक हैपरन्तु 0.01 सार्थकता स्तर पर आवश्यक मान से कम है इसलिये इस अंतर को 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर माना जा सकता है परन्तु 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं माना जा सकता है। अतः शहरी कामकाजी व ग्रामीण कामकाजी महिलाओं के जनसांख्यिकी मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति के संबंध में सार्थक अंतर है।

कामकाजी शहरी एवं ग्रामीण महिलाओं के सौंदर्य संबंधी मूल्यों के प्रति अभिवृत्तियों के अंतर की सार्थकता की व्याख्या

उपर्युक्त तालिका के अनुसार 200 शिक्षित कामकाजी शहरी महिलाओं व 50 कामकाजी ग्रामीण महिलाओं के सौंदर्य संबंधी मूल्यों के प्रति अभिवृत्तियों के अंकों का मध्यमान क्रमशः 8.38 व 8.22 है। दोनों समूहों का प्रमाप विचलन 2.249 व 2.315 है। अतः शहरी कामकाजी महिलाओं में अभिवृत्ति अंक, ग्रामीण महिलाओं के अपेक्षा अधिक पाया गया है लेकिन यह अंतर सार्थक नहीं है। समंकों के विश्लेषण में प्राप्त टी मान 0.433 है जबकि 0.05 व 0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु क्रमशः 1.96 व 2.58 टी मान आवश्यक है। प्राप्त टी मान आवश्यक मान से कम है इसलिये इस अंतर को सार्थक अंतर नहीं माना जा सकता। अतः शहरी कामकाजी व ग्रामीण कामकाजी महिलाओं के सौंदर्य संबंधी मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति के संबंध में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

कामकाजी शहरी एवं ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्तियों के अंतर की सार्थकता की व्याख्या

उपर्युक्त तालिका के अनुसार 200 शिक्षित कामकाजी शहरी महिलाओं व 50 कामकाजी ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्तियों के अंकों का मध्यमान क्रमशः 8.47 व 8.50 है। दोनों समूहों का प्रमाप विचलन 2.336 व 2.159 है। अतः शहरी कामकाजी महिलाओं में अभिवृत्ति अंक, ग्रामीण महिलाओं के अपेक्षा अधिक पाया गया है लेकिन यह अंतर सार्थक नहीं है। समंकों के विश्लेषण में प्राप्त टी मान –0.082 है जबकि 0.05 व 0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु क्रमशः 1.96 व 2.58 टी मान आवश्यक है। प्राप्त टी मान आवश्यक मान से कम है इसलिये इस अंतर को सार्थक अंतर नहीं माना जा सकता। अतः शहरी कामकाजी व ग्रामीण कामकाजी महिलाओं के आर्थिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति के संबंध में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

कामकाजी शहरी एवं ग्रामीण महिलाओं के ज्ञान मूल्यों के प्रति अभिवृत्तियों के अंतर की सार्थकता की व्याख्या

उपर्युक्त तालिका के अनुसार 200 शिक्षित कामकाजी शहरी महिलाओं व 50 कामकाजी ग्रामीण महिलाओं के ज्ञान संबंधी मूल्यों के प्रति अभिवृत्तियों के अंकों का मध्यमान क्रमशः 8.93 व 8.94 है। दोनों समूहों का प्रमाप विचलन 2.400 व 2.630 है। अतः शहरी कामकाजी महिलाओं के प्रति अभिवृत्ति अंक, ग्रामीण महिलाओं के अपेक्षा अधिक पाया गया है लेकिन यह अंतर सार्थक नहीं है। समंकों के विश्लेषण में प्राप्त टी मान 0.039 है जबकि 0.05 व 0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु क्रमशः 1.96 व 2.58 टी मान आवश्यक है। प्राप्त टी मान आवश्यक मान से कम है इसलिये इस अंतर को सार्थक अंतर नहीं माना जा सकता। अतः शहरी कामकाजी व ग्रामीण कामकाजी महिलाओं के ज्ञान संबंधी मूल्यों के प्रति अभिवृत्तिके संबंध में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

कामकाजी शहरी एवं ग्रामीण महिलाओं के सुखवादी मूल्यों के प्रति अभिवृत्तियों के अंतर की सार्थकता की व्याख्या

उपर्युक्त तालिका के अनुसार 200 शिक्षित कामकाजी शहरी महिलाओं व 50 कामकाजी ग्रामीण महिलाओं की सुखवादी मूल्यों के प्रति अभिवृत्तियों के अंकों का मध्यमान क्रमशः 8.55 व 8.42 है। दोनों समूहों का प्रमाप विचलन 2.301 व 2.483 है। अतः शहरी कामकाजी महिलाओं के प्रति अभिवृत्ति अंक, ग्रामीण महिलाओं के अपेक्षा अधिक पाया गया है लेकिन यह अंतर सार्थक नहीं है। समंकों के विश्लेषण में प्राप्त टी मान 0.338 है जबकि 0.05 व 0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु क्रमशः 1.96 व 2.58 टी मान आवश्यक है। प्राप्त टी मान आवश्यक मान से कम है इसलिये इस अंतर को सार्थक अंतर नहीं माना जा सकता। अतः शहरी कामकाजी व ग्रामीण कामकाजी महिलाओं का सुखवादी मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति के संबंध में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।

कामकाजी शहरी एवं ग्रामीण महिलाओं के शक्ति मूल्यों के प्रति अभिवृद्धियों के अंतर की सार्थकता की व्याख्या

उपर्युक्त तालिका के अनुसार 200 शिक्षित कामकाजी शहरी महिलाओं व 50 कामकाजी ग्रामीण महिलाओं की शक्ति मूल्यों के प्रति अभिवृत्तियों के अंकों का मध्यमान क्रमशः 7.79 व 8.56 है। दोनों समूहों का प्रमाप विचलन 2.044 व 1.809 है। अतः शहरी कामकाजी महिलाओं के प्रति अभिवृत्ति अंक, ग्रामीण महिलाओं के अपेक्षा अधिक पाया गया है लेकिन यह अंतर सार्थक नहीं है। समंकों के विश्लेषण में प्राप्त टी मान 2.436 है

जबकि 0.05 व 0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु क्रमशः 1.96 व 2.58 टी मान आवश्यक है। प्राप्त टी मान 0.05 सार्थकता स्तर से अधिक है अतः प्राप्त पदों का मूल्य सार्थक हैपरंतु 0.01 सार्थकता मान से कम है, अतः इन्हें सार्थक नहीं माना जा सकता है। अतः शहरी कामकाजी व ग्रामीण कामकाजी महिलाओं का शक्ति मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति के संबंध को सार्थक माना जा सकता है।

कामकाजी शहरी एवं ग्रामीण महिलाओं के पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्यों के प्रति अभिवृत्तियों के अंतर की सार्थकता की व्याख्या

उपर्युक्त तालिका के अनुसार 200 शिक्षित कामकाजी शहरी महिलाओं व 50 कामकाजी ग्रामीण महिलाओं के पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्यों के प्रति अभिवृत्तियों के अंकों का मध्यमान क्रमशः 9.01 व 9.30 है। दोनों समूहों का प्रमाप विचलन 2.561 व 2.517 है। अतः शहरी कामकाजी महिलाओं के प्रति अभिवृत्ति अंक, ग्रामीण महिलाओं के अपेक्षा अधिक पाया गया है लेकिन यह अंतर सार्थक नहीं है। समंकों के विश्लेषण में प्राप्त टी मान –0.731 है जबकि 0.05 व 0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु क्रमशः 1.96 व 2.58 टी मान आवश्यक है। प्राप्त टी मान आवश्यक मान से कम है इसलिये इस अंतर को सार्थक अंतर नहीं माना जा सकता। अतः शहरी कामकाजी व ग्रामीण कामकाजी महिलाओं के पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति के संबंध में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

कामकाजी शहरी एवं ग्रामीण महिलाओं के स्वास्थ्य मूल्यों के प्रति अभिवृत्तियों के अंतर की सार्थकता की व्याख्या

उपर्युक्त तालिका के अनुसार 200 शिक्षित कामकाजी शहरी महिलाओं व 50 कामकाजी ग्रामीण महिलाओं के स्वास्थ्य मूल्यों के प्रति अभिवृत्तियों के अंकों का मध्यमान क्रमशः 8.06 व 7.96 है। दोनों समूहों का प्रमाप विचलन 1.989 व 2.030 है। अतः शहरी कामकाजी महिलाओं के प्रति अभिवृत्ति अंक, ग्रामीण महिलाओं के अपेक्षा अधिक पाया गया है लेकिन यह अंतर सार्थक नहीं है। समंकों के विश्लेषण में प्राप्त टी मान 0.317 है जबकि 0.05 व 0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु क्रमशः 1.96 व 2.58 टी मान आवश्यक है। प्राप्त टी मान आवश्यक मान से कम है इसलिये इस अंतर को सार्थक अंतर नहीं माना जा सकता। अतः शहरी कामकाजी व ग्रामीण कामकाजी महिलाओं के स्वास्थ्य मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति के संबंध में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध निष्कर्ष

अध्ययन के निष्कर्ष निम्न प्रकार से रहे हैं :

- कामकाजी विवाहित व अविवाहित महिलाओं की आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति के सम्बंध में सार्थक अंतर पाया गया है।
- गैर कामकाजी विवाहित एवं अविवाहित महिलाओं की सामाजिक–धार्मिक मामलों में आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति के संबंध में सार्थक अंतर नहीं है।
- गैर कामकाजी विवाहित व अविवाहित महिलाओं की शादी के मामले में आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति के समबंध में सार्थक अंतर देखने को मिला है।
- गैर कामकाजी विवाहित व अविवाहित महिलाओं की महिला की स्थिति के संबंध में आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति के संबंध में सार्थक अंतर रखते है।
- गैर कामकाजी विवाहित व अविवाहित महिलाओं की शिक्षा सम्बंधी आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति के संबंध में सार्थक अंतर है।
- गैर कामकाजी विवाहित व अविवाहित महिलाओं की आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति के सम्बंध में सार्थक अंतर पाया गया है।
- शहरी कामकाजी व ग्रामीण कामकाजी महिलाओं में धार्मिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति के संबंध में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

- शहरी कामकाजी व ग्रामीण कामकाजी महिलाओं में सामाजिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति के संबंध में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- शहरी कामकाजी व ग्रामीण कामकाजी महिलाओं के जनसांख्यिकी मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति के संबंध में सार्थक अंतर है।
- शहरी कामकाजी व ग्रामीण कामकाजी महिलाओं के सौंदर्य संबंधी मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति के संबंध में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- शहरी कामकाजी व ग्रामीण कामकाजी महिलाओं के आर्थिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति के संबंध में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- शहरी कामकाजी व ग्रामीण कामकाजी महिलाओं के ज्ञान संबंधी मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति के संबंध में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- शहरी कामकाजी व ग्रामीण कामकाजी महिलाओं में सुखवादी मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति के संबंध में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।
- शहरी कामकाजी व ग्रामीण कामकाजी महिलाओं में शक्ति मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति के संबंध को सार्थक माना जा सकता है।
- शहरी कामकाजी व ग्रामीण कामकाजी महिलाओं के पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति के संबंध में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध के लिए सुझाव

वर्तमान अध्ययन के आलोक में शोधार्थी द्वारा निम्नलिखित सुझावों की सिफारिश की गई है :

- वर्तमान जांच में जिन चरों पर विचार किया गया है, उनमें से एक भाग की भविष्यवाणी माता–पिता के रवैये, संज्ञानात्मक शैली, मनो–सामाजिक बाधाओं, सामाजिक प्रक्रियाओं, सामाजिक–आर्थिक स्थिति जैसे कुछ सहसंबंधों पर विचार किया जा सकता है ।
- एक व्यापक अध्ययन करने के लिए निरक्षर, साक्षर, शिक्षित और उच्च शिक्षित आबादी के बड़े वर्गों पर अध्ययन किए जाने की आवश्यकता है।
- बेहतर निष्कर्ष निकालने के लिए छात्रों, शिक्षकों, प्रशासकों, आम व्यक्तियों के व्यवसायों की विविधताओं के मामले में ऐसे चरों पर अध्ययन करने का सुझाव दिया जा सकता है।
- तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए एक ही प्रकार की जांच देश के विभिन्न क्षेत्रों में की जा सकती है और क्षेत्रानुसार अधिक संगत शोध निष्कर्ष प्राप्त किये जाकर समाज के समक्ष रखे जा सकते हैं।
- चरों की घटना में गहन ज्ञान प्राप्त करने के लिए केस अध्ययन किया जा सकता है। इसके साथ ही चरों की संख्या में भी वृद्वि की जा सकती है।
- शोध अध्ययन में न्यादर्श को 500 से बढ़ाकर 1000 किया जा सकता है, जिससे अधिक सटीक निष्कर्ष प्राप्त किये जा सकते हैं।
- शोध अध्ययन हेतु न्यादर्श देश के अन्य राज्यों से भी लिया जा सकता है और एक तुलनात्मक शोध अध्ययन किया जा सकता है।
- शोध अध्ययन में भारत की तुलना अन्य देशों से भी की जा सकती हैऔर तुलनात्मक अध्ययन से विभिन्न देशों की कामकाजी एवं गैर–कामकाजी महिलाओं की आर्थिक स्थिति को ज्ञात किया जा सकता है।
- अध्ययन में उपयोग किए गए चरों को लेकर पुरुषों पर भी अध्ययन किया जा सकता है। यह अध्ययन कामकाजी पुरुषों और गैर–कामकाजी पुरुषोंके मध्य हो सकता है।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त चरों के अतिरिक्त अन्य चर जैसे शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति, व्यावसायिक संतुष्टि, समायोजन, संयुक्त परिवार व एकल परिवार के प्रति अभिवृत्तियों का अध्ययन भी किया जा सकता है।

References

1. Ahuja, Ram (2001): Research Method, New Dehli, Rawat Publication
2. Ahmad, S. N. (2009): Women's Work and Health in Iran: A Comparison of Working and Non-Working Mothers, Social Science & Medicine, 54(5), pp. 753-765
3. Bhatnagar, S. & Saxena (Ed) (2005): Advanced Educational Psychology, Meerut, Lai Book Depot
4. Bloom, D. E. and Cohen, J.E. (2002), Education for All: AnUnfinished Revolution, Daedalus (Summer: pp84-95)
5. Borg, W. R. & Gall, M. D. (1989): Educational Research-An Introduction, New York, longman
6. Chauhan, S.S. (1979): Innovations in Teaching-Learning Process, New Delhi, Vikas Publishing House Pvt. Ltd.
7. Government of India, (2002): Select Educational Statistics 2000-01, Department of Education, MHRD, New Delhi
8. Jaya Arunachalam, U. Kalpagam, Development &Empowerment: Rural Women in India, Rawat Publications, Jaipur (2006)
9. Joseph, P. S., Sandvik. S. P. (1982): Attitudinal Differences between Full-Time Homemakers and Women who work outside the home. Sex Roles, 15 (6), 299-310
10. Kothari, C.R. (1996): Research Methodology - 'Methods & Techniques', New Delhi, Wishwa Prakashan
11. S.Wal &Sruthi Banerji, Encyclopedia of Women as Human Resources in 21st Century & Beyond, Sarup &Sons Pvt.Ltd, New Delhi (2001)
12. Ralhan O.P., Indian Women Through Ages &Modernity, Anmol Publications Pvt. Ltd, New Delhi (1995)
13. Rattani, S. A. Working and Nonworking Women"s Descriptions and Experiences of their Roles in Society, International Journal of Humanities and Social Science, 2012; 2(19)
14. Palmore, E, & Liukart, C. (1972: Health and Social Factor Related to Life Satisfaction, Journal of Health and Social Behavior, 13:68-80

❖◆❖